भजन

तर्ज–रहते थे कभी

रहते थे तेरे संग धाम मे हम,कभी जान से भी प्यारों की तरह
बैठे है पिया तेरे चरणो में,हम आज गुनाहगारो की तरह

1–वायदे तो किये थे खिलवत में,होगें ना जुदा हम तुझसे कभी
दुख पाए बड़े जुदा होकर के,हो गये हम बीमारो की तरह

2–वो इश्के सुराही याद आए,जिसे आठो जाम पिलाते थे
अब क्यूं तरसाते हो हमको,देखें हम तलबगारों की तरह

3–जलवों में बसर होते अपने,हर पल आनन्द मे रहते थे
दे दो मस्ती उस आनन्द की,बैठो ना बेगानो की तरह

4–अजी कैसे संभालें दिल अपना,साकी जो हो सामने नजरों के
बैठो फिर आज पिलाने को,दिल खोल के दिलदारों की तरह